

कला और समाज (Relation between Art and Society)

Intro.

कला हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज को प्रभावित करने में कला की भूमिका अग्रणी है। कला सामाजिक सामाजिक ऐसे विविध सत्त्वों और वृद्धियों को प्रकट करती है जो शब्दों से नहीं प्रकट किए जा सकते हैं और न कला के अलावे किसी अन्य माध्यम से। कला बालकों को सिखाती है कि किसी समस्या को कठु हल हो सकते हैं, और किसी प्रश्न के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं। यह बालकों में विविध दृष्टिकोणों का विकास करती है। जैसे के अनुसार, कला किसी कलाकार के चेतन मन की क्रिया है। कलाकार अपनी कला से किसी समस्या की अभिव्यक्ति कर अपने दर्शकों, श्रोताओं से संबंध स्थापित करता है। कला कलाकार का संवेग है, जब संवेगों की अभिव्यक्ति होती है तो कला बन जाती है। कलाकार से विशिष्ट संवेदन और अपेक्षा की जाती है। कला और समाज के संबंध को निम्न रूप में वर्णित किया जा सकता है -

1. कला का समाज पर प्रभाव : राजा कमल मुखर्जी के शब्दों में, "प्रत्येक समाज की अपनी एक कलात्मक स्वरूप होती है तथा उसकी एक खास विशेषता होती है।" प्रत्येक देश तथा उसके समाज अपने सामाजिक रीति-रिवाजों, धर्म, संस्कृति और रीति से भरे होते हैं। यह उसके लिए आदर्श होते हैं। उनकी आस्था, विश्वास उससे जुड़े होते हैं। उनकी सामाजिक व्यवस्थाओं, रीति-रिवाजों, कलाकृतियों में इसकी गहलक साफ दिखाई देती है, जैसे - हिन्दुओं के मंदिर, सिखों के गुरुद्वारा, मुस्लिमों के मसजिद तथा इशादियों के चर्च। यह बालान के लिए काफी होता है कि यहाँ आनेवाले व्यक्ति किस धर्म में अपनी आस्था रखनेवाले हैं।

2. समाज और कलाकार के मध्य संबंध
Relationship between Society and Artist.

समाज और कलाकार के मध्य एक सुनीती रहित
अन्तर संबंध होता है। कलाकार समाज का सदस्य
होने के नाते समाज के विविध वातावरण से
भिन्न रहता है। कलाकार अपने श्रोताओं, दर्शकों
के सामने समाज, परिवेश के दुपे हुए सत्य को
प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। कला कलाकारों
की आत्म-आभिव्यक्तियों का एक विशिष्ट माध्यम है।
कला प्रदर्शन के कई माध्यम हैं जैसे- चित्रकारी,
हस्तशिल्प, साज-सज्जा, प्रदर्शन कला, नृत्य कला,
संगीत, स्वर संगम, वाद्ययंत्र, तथा अन्य कई।
यह सभी माध्यम कलाकारों को समाज से जोड़ने
का कार्य करती हैं।

१. कला और सामाजिक परिवर्तन (Art and social change) →

किसी समाज की पारंपरिक व्यवस्था सामाजिक व्यवस्था
में परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन कहलाती है।
कलाकार वे लोग होते हैं जो अपने विचारों और
प्रतिक्रियाओं को बिना किसी राजनीतिक, सामाजिक
दबाव में आए बिना प्रस्तुत करते हैं। राजनीतिक
दमन या संघर्ष का प्रभाव जब किसी समाज
पर पड़ता है तो सामाजिक परिवर्तन अवश्य मभावी
माना जाता है। इसकी प्रस्तुती ही समाज की
दर्पणा मानी जाती है।